06-07-25 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 18-01-06 मधुबन

“संकल्प, समय और बोल के बचत की स्कीम द्वारा सफलता की सेरीमनी मनाओ, निराश आत्माओं में आशा के दीप जगाओ"

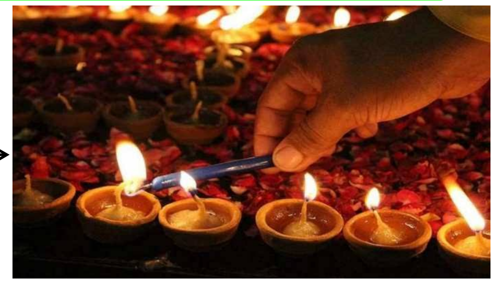

आज स्नेह का दिन है। चारों ओर के सभी बच्चे स्नेह के सागर में समाये हुए हैं। यह स्नेह सहजयोगी बनाने वाला है। स्नेह सर्व अन्य आकर्षण से परे करने वाला है। स्नेह का वरदान आप सभी बच्चों को जन्म का वरदान है। स्नेह में परिवर्तन कराने की शक्ति है। तो आज के दिन दो प्रकार के बच्चे चारों ओर देखे। लवली बच्चे तो सभी हैं लेकिन एक हैं लवली बच्चे, दूसरे हैं लवलीन बच्चे। लवलीन बच्चे हर संकल्प, हर श्वांस में, हर बोल, हर कर्म में स्वत: ही बाप समान सहज रहते हैं, क्यों? बच्चों को बाप ने समर्थ भव का वरदान दिया है। आज के दिन को स्मृति सो समर्थ दिवस कहते हो, क्यों? बाप ने आज के दिन स्वयं को बैकबोन बनाया और लवलीन बच्चों को विश्व की स्टेज पर प्रत्यक्ष किया। व्यक्त में प्रत्यक्ष बच्चों को किया और स्वयं अव्यक्त रूप में साथी बने।

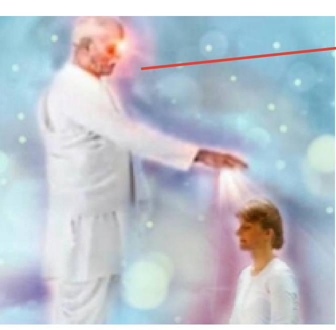

आज के इस स्मृति सो समर्थ दिवस पर बापदादा ने बच्चों को बालक सो मालिक बनाए सर्व शक्तिवान बाप को मास्टर सर्वशक्तिवान बन प्रत्यक्ष करने का कार्य दिया और बाप देखके खुश है कि यथायोग तथा शक्ति सभी बच्चे बाप को प्रत्यक्ष करने अर्थात् विश्व कल्याण कर विश्व परिवर्तन करने के कार्य में लगे हुए हैं। बाप द्वारा सर्व शक्तियों का वर्सा जो मिला हुआ है वह स्व प्रति और विश्व की आत्माओं के प्रति कार्य में लगा रहे हैं। बापदादा भी ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान बाप समान उमंग-उत्साह में रहने वाले आलराउण्ड सेवाधारी, नि:स्वार्थ सेवाधारी, बेहद के सेवाधारी बच्चों को पदम-पदमगुणा दिल से मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो। देश के बच्चे भी कम नहीं और विदेश के बच्चे भी कम नहीं हैं। बापदादा ऐसे बच्चों की दिल ही दिल में महिमा भी करते और गीत भी गाते वाह! बच्चे वाह! आप सभी वाह! वाह! बच्चे हो ना! हाथ हिला रहे हैं, बहुत अच्छा। बाप-दादा को बच्चों के ऊपर फ़खुर है - सारे कल्प में ऐसा कोई बाप नहीं है जिसका हर बच्चा स्वराज्य अधिकारी राजा हो। आप सभी तो स्वराज्य अधिकारी राजा हो ना! प्रजा तो नहीं ना! कई बच्चे जब रूहरिहान करते हैं तो कहते हैं हम भविष्य में क्या बनेंगे, उसका चित्र

Swamaan

पूछो अपने आप से...

हमको दिखाओ। बापदादा क्या कहते हैं? पुराने बच्चे तो कहते हैं कि जगत अम्बा माँ हर एक को चित्र देती थी, तो हमें भी चित्र दो। बापदादा कहते हैं हर एक बच्चे को बाप ने विचित्र दर्पण दिया है, उस दर्पण में अपने भविष्य का चित्र देख सकते हो कि मैं कौन! जानते हो, वह दर्पण आपके पास है? जानते हो कौन सा दर्पण? पहली लाइन वाले तो जानते होंगे ना! जानते हैं? वह दर्पण है वर्तमान समय की स्वराज्य स्थिति का दर्पण। वर्तमान समय जितना स्वराज्य अधिकारी हैं उस अनुसार विश्व के राज्य अधिकारी बनेंगे। अब अपने आपको दर्पण में देखो स्वराज्य अधिकारी सदा हैं? वा कभी अधीन, कभी अधिकारी? अगर कभी अधीन, कभी अधिकारी बनते हैं, कभी आंख धोखा देती, कभी मन धोखा देता, कभी मुख धोखा देता, कभी कान भी धोखा दे देता है। व्यर्थ बातें सुनने का शौक हो जाता है। अगर कोई भी कर्मेन्द्रिय धोखा देती है, परवश बना देती है, तो इससे सिद्ध है कि बाप द्वारा जो सर्व शक्तियाँ वरदान में मिली हैं, वा वर्से में मिली हैं वह कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर नहीं है। तो सोचो जो स्व के ऊपर रूल नहीं कर पाते वह विश्व पर रूल कैसे करेंगे! अपने वर्तमान स्थिति के

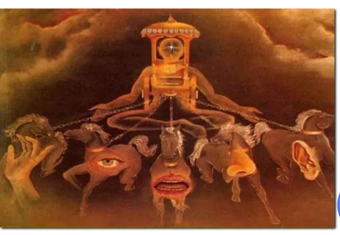

Self Checking

Point to be Noted

स्वराज्य अधिकारी के दर्पण में चेक करो। दर्पण तो सभी को मिला है ना? दर्पण मिला है तो हाथ उठाओ। दर्पण में कोई दाग तो नहीं हो गया है? स्पष्ट है दर्पण?

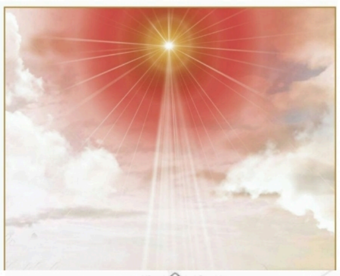

Mind it...

बापदादा ने हर एक बच्चे को स्वराज्य अधिकारी का स्वमान दिया है। मास्टर सर्वशक्तिवान का टाइटिल सभी बच्चों को बाप द्वारा मिला हुआ है। मास्टर शक्तिवान नहीं, सर्वशक्तिवान। कई बच्चे रूहरिहान में यह भी कहते - बाबा आपने तो सर्वशक्तियां दी लेकिन यह शक्तियां कभी-कभी समय पर काम नहीं करती। रिपोर्ट करते हैं - समय पर इमर्ज नहीं होती, समय बीत जाता है पीछे इमर्ज होती हैं। कारण क्या होता? जिस समय जिस शक्ति को आह्वान करते हो उस समय चेक करो कि मैं मालिकपन की सीट पर सेट हूँ? अगर कोई सीट पर सेट नहीं होता तो बिगर सीट वाले का कोई आर्डर नहीं मानता है। स्वराज्य अधिकारी हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, बाप द्वारा वर्सा और वरदान का अधिकारी हूँ, इस सीट पर सेट होकर फिर आर्डर करो। क्या करूं, कैसे करूं, होता नहीं, सीट से नीचे बैठ, सीट से उतरकर आर्डर करते हो

समजा?

तो मानेगा कैसे! आजकल के जमाने में भी अगर कोई प्राइममिनिस्टर है, सीट पर है तो सब मानेंगे और सीट से उतर गया तो कोई मानेगा? तो चेक करो सीट पर सेट हूँ? अधिकारी होकर आर्डर करता हूँ? बाप ने हर एक बच्चे को अथॉरिटी दी है, परमात्म अथॉरिटी है, कोई आत्मा की अथॉरिटी नहीं मिली है, महात्मा की अथॉरिटी नहीं मिली है, परमात्म अथॉरिटी है, तो अथॉरिटी और अधिकार इस स्थिति में स्थित होकर कोई भी शक्ति को आर्डर करो, वह जी हज़ूर, जी हज़ूर करेगी। सर्वशक्तियों के आगे यह (1) माया, (2) प्रकृति, (3) संस्कार, (4) स्वभाव सब दासी बन जायेंगे। आप मालिक का इन्तजार करेंगे, मालिक कोई आर्डर करो।

Check to CHANGE

The World Almighty

Mind Very Well...

आज समर्थ दिवस है ना, तो क्या-क्या समर्थियां हैं बच्चों में वह बापदादा रिवाइज करा रहा है। अण्डरलाइन करा रहा है। शक्तिहीन समय पर क्यों हो जाते? बापदादा ने देखा है, मैजारिटी बच्चों की लीकेज है, शक्तियां लीकेज़ होने के कारण कम हो जाती हैं और लीकेज़ विशेष दो बातों की है - वह दो बातें हैं - (1) संकल्प और (2) समय वेस्ट जाता है। खराब नहीं होता लेकिन व्यर्थ, समय पर बुरा कार्य

नहीं करते हैं लेकिन जमा भी नहीं करते हैं। सिर्फ देखते हैं आज बुरा कुछ नहीं हुआ लेकिन अच्छा क्या जमा किया? गंवाया नहीं लेकिन कमाया? दु:ख नहीं दिया लेकिन सुख कितनों को दिया? अशान्त किसको नहीं किया, शान्ति का वायब्रेशन कितना फैलाया? शान्तिदूत बनके शान्ति कितनों को दी - वायुमण्डल द्वारा या मुख द्वारा, वायब्रेशन द्वारा? क्योंकि जानते हो कि यही थोड़ा सा समय है पुरुषोत्तम कल्याणकारी, जमा करने का समय है। अब नहीं तो कब नहीं, यह हर घड़ी याद रहे। हो जायेगा, कर लेंगे..... अब नहीं तो कब नहीं। ब्रह्मा बाप का यही तीव्रगति का पुरुषार्थ रहा तब नम्बरवन मंजिल पर पहुंचा। तो जो बाप ने समर्थियां दी हैं, आज समर्थ दिवस पर याद आई ना! बचत की स्कीम बनाओ। संकल्प की बचत, समय की बचत, वाणी की बचत, जो यथार्थ बोल नहीं हैं, अयथार्थ व्यर्थ बोल की बचत।

पूछो अपने आप से...

It is 2025

अब तो जागो....

बापदादा हमसे क्या चाहते है...?

बापदादा सभी बच्चों का सदा अथॉरिटी की सीट पर सेट हुआ स्वराज्य अधिकारी राजा रूप देखने चाहता है। पसन्द है? यह रूप पसन्द है ना! कभी भी बापदादा किसी भी बच्चे को टी.वी. में देखे, तो

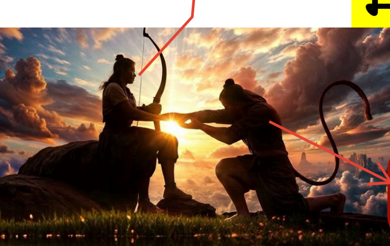

हाँ बाबा, हाजीर बाबा, अभी बाबा...

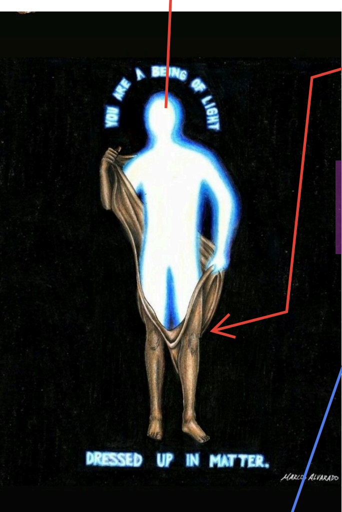

याद रहे...

इसी रूप में देखे। बापदादा की नेचरल टी.वी. है, स्विच नहीं दबाना पड़ता। एक ही समय पर चारों ओर का देख सकते हैं। हर एक बच्चे को, कोने-कोने वाले को देख सकते हैं। तो हो सकता है? कल से टी.वी. खोलें तो क्या दिखाई देंगे? फरिश्ते की ड्रेस में, फरिश्ते की ड्रेस है चमकीली लाइट की ड्रेस, यह शरीरभान के मिट्टी की ड्रेस नहीं पहनना। चमकीली ड्रेस हो, सफलता का सितारा हो, ऐसी मूर्ति हर एक की बापदादा देखने चाहते हैं। पसन्द है ना! मिट्टी की ड्रेस पहनेंगे तो मिट्टी के हो जायेंगे ना! जैसे बाप अशरीरी है, ब्रह्मा बाप चमकीली ड्रेस में है, फरिश्ता है। तो फालो फादर। स्थूल में देखो कोई आपके कपड़े में मिट्टी लग जाए, दाग हो जाए तो क्या करते हो? बदल लेते हो ना! ऐसे ही चेक करो कि सदा चमकीली फरिश्ते की ड्रेस है? जो बाप को फ़खुर है कि हर एक बच्चा राजा बच्चा है, उसी स्वरूप में रहो। राजा बनके रहो। फिर यह माया आपकी दासी बन जायेगी और विदाई लेने आयेगी, आधाकल्प के लिए विदाई लेने आयेगी, वार नहीं करेगी। बापदादा सदा कहते हैं - बाप के ऊपर बलिहार जाने वाले कभी हार नहीं खा सकते। अगर हार है तो बलिहार नहीं हैं।

ये पक्का समझ लो

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Litmus Test for Self Checking

अभी आप सभी की मीटिंग होने वाली है ना, मीटिंग की डेट फिक्स होती है ना। तो इस बारी सिर्फ सर्विस के प्लैन की मीटिंग बापदादा नहीं देखने चाहते, सर्विस के प्लैन बनाओ लेकिन मीटिंग में सफलता की सेरीमनी का प्लैन बनाओ। बहुत सेरीमनी कर ली अब सफलता की सेरीमनी की डेट फिक्स करो। चलो सोचते हैं कि सभी कैसे होंगे! बापदादा कहते हैं कम से कम 108 रत्न तो सफलतामूर्त की सेरीमनी मनायें। एक्जैम्पुल बनें। यह हो सकता है? बोलो, पहली लाइन वाले बोलो, हो सकता है? जवाब देने की हिम्मत नहीं रखते। सोचते हैं पता नहीं करेंगे, नहीं करेंगे? हिम्मत से सब कुछ हो सकता है। दादी बतावे - 108 सफलतामूर्त बन सकते हैं? (हाँ जरूर बन सकते हैं, सफलता की सेरीमनी हो सकती है) देखो, दादी में हिम्मत है। आप सबकी तरफ से हिम्मत रख रही है। तो सहयोगी बनना। तो यह जो मीटिंग होगी ना, उसमें बापदादा रिपोर्ट लेंगे। पाण्डव बताओ ना, क्यों चुप हैं? चुप क्यों हैं? यह हिम्मत क्यों नहीं रखते? करके दिखायेंगे? ऐसे? अच्छा है, हिम्मत तो रख सकते हैं? जो समझते हैं हम तो हिम्मत रख करके दिखायेंगे, वह हाथ उठाओ। करेंगे? कोई

संस्कार नहीं रहेगा? कोई कमजोरी नहीं रहेगी? अच्छा, मधुबन वाले भी हाथ उठा रहे हैं। वाह! मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा 108 तो फिर सहज हो जायेगा। इतनों ने हाथ उठाया तो 108 क्या बड़ी बात है। डबल फॉरेनर्स क्या करेंगे? हाँ, दादी जानकी सुन रही है, उसको उमंग आ रहा है मैं बोलूं। फॉरेन की माला भी देखेंगे, ठीक है? हाथ उठाओ, ठीक है? अच्छा, आज यह (डबल फॉरेनर) कितने बैठे हैं? (200) इसमें से 108 तो तैयार हो जायेंगे! ठीक है ना! इसमें करना पहले मैं। इसमें दूसरे को नहीं देखना, पहले मैं। और मैं-मैं नहीं करना, यह मैं जरूर करना। और भी काम बापदादा देता है।

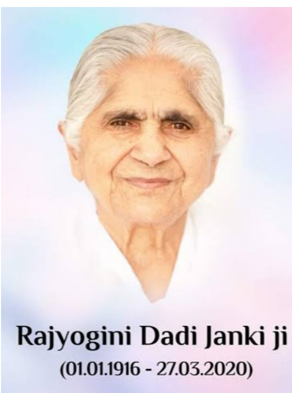

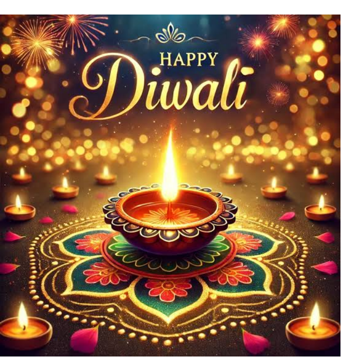

आज समर्थ दिवस है ना तो समर्थी है। बापदादा एक विचित्र दीवाली मनाने चाहते हैं। आपने तो दीवाली कई बार मनाई है लेकिन बापदादा विचित्र दीवाली मनाने चाहता है, सुनायें? अच्छा। वर्तमान समय को तो देख ही रहे हो, दिन प्रतिदिन चारों ओर मनुष्य आत्माओं में निराशा बहुत बढ़ रही है। तो चाहे मन्सा सेवा करो, चाहे वाचा करो, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क की करो, लेकिन बाप-दादा निराश

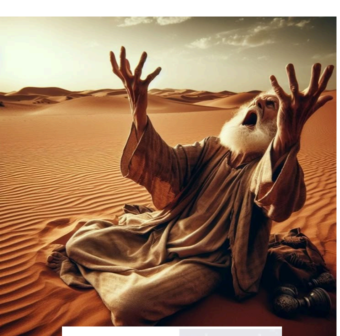

बापदादा हमसे क्या चाहते है...?

हाँ बाबा, हाजीर बाबा, अभी बाबा...

मनुष्यों के अन्दर आशा का दीप जगाने चाहते हैं। चारों ओर मनुष्य आत्माओं के मन में आशा के दीपक जग जायें। यह आशा के दीपकों की दीवाली बापदादा देखने चाहते हैं। हो सकता है? वायुमण्डल में कम से कम यह आशा का दीपक जग जाए तो अब विश्व परिवर्तन हुआ कि हुआ, गोल्डन सवेरा आया कि आया। यह निराशा खत्म हो जाए - कुछ होना नहीं है, कुछ होना नहीं है। आशा के दीप जग जाएं। कर सकते हैं ना, यह तो सहज है ना या मुश्किल है? सहज है? जो करेगा वह हाथ उठाओ। करेंगे? इतने सभी दीपक जगायेंगे तो दीपमाला तो हो जायेगी ना! वायब्रेशन इतना पावरफुल करो, चलो सामने पहुंच नहीं सकते हैं लेकिन लाइट हाउस, माइट हाउस बन दूर तक वायब्रेशन फैलाओ। जब साइन्स लाइट हाउस द्वारा दूर तक लाइट दे सकती है तो क्या आप वायब्रेशन नहीं फैला सकते! सिर्फ दृढ़ संकल्प करो - करना ही है। बिजी हो जाओ। मन को बिजी रखेंगे तो स्वयं को भी फायदा और आत्माओं को भी फायदा। चलते-फिरते यही वृत्ति में रखो कि विश्व का कल्याण करना ही है। यह वृत्ति वायुमण्डल फैलायेगी क्योंकि समय अचानक होने वाला है। ऐसा न हो कि आपके भाई बहिनें उल्हना

Double Benefit

Note it Down

Attention Please...!

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

उलाहना का अर्थ है "शिकायत" या "गिला"। यह किसी की गलती या अपराध के बारे में दुख के साथ व्यक्त करना या किसी को उसकी गलती या चूक के बारे में बताना है जिससे कुछ दुख हुआ हो।

देवें कि आपने हमें बताया क्यों नहीं! कई बच्चे सोचते हैं अन्त तक कर लेंगे लेकिन अन्त तक करेंगे तो भी आपको उल्हना देंगे। यही उल्हना देंगे हमको कुछ समय पहले बताते, कुछ तो बना लेते इसलिए हर संकल्प में बापदादा की याद से लाइट लेते जाओ, लाइट हाउस होके लाइट देते जाओ। टाइम वेस्ट नहीं करो, बापदादा जब देखते हैं बहुत युद्ध करते हैं, तो बापदादा को अच्छा नहीं लगता। मास्टर सर्वशक्तिवान और युद्ध कर रहा है! तो राजा बनो, सफलतामूर्त बनो, निराशा को खत्म कर आशा के दीप जगाओ। अच्छा।

सभी तरफ के बच्चों की स्नेह के याद की मालायें तो बहुत पहुंच गई हैं। बापदादा याद भेजने वालों को सम्मुख देखते हुए याद का रेसपान्ड दिल की दुआयें, दिल का प्यार दे रहे हैं। अच्छा।

For Newcommers

जो पहली बार आये हैं वह उठो। अच्छा है, हर टर्न में देखा है मैजारिटी नये होते हैं। तो सर्विस बढ़ाई है ना, इतनों को सन्देश दिया है। जैसे आप लोगों को सन्देश मिला ऐसे आप भी और दुगना, दुगना

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

सन्देश दो। योग्य बनाओ। अच्छा है। हर सबजेक्ट में और उमंग-उत्साह से आगे बढ़ो। अच्छा है।

अच्छा - अभी लक्ष्य रखो, चलते-फिरते चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा सेवा के बिना भी नहीं रहना है और याद के बिना भी नहीं रहना है। याद और सेवा सदा ही साथ है ही। इतना अपने को बिजी रखो, याद में भी सेवा में भी। खाली रहते हैं तो माया को आने का चांस मिलता है। इतना बिजी रहो जो दूर से ही माया आने की हिम्मत नहीं रखे। फिर जो बाप समान बनने का लक्ष्य रखा है, वह सहज हो जायेगा। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी, स्नेही स्वरूप रहेंगे। अच्छा।

Mind Very Well...

बापदादा के नयनों में समाये हुए नूरे रत्न बच्चे, बाप की सर्व प्रापर्टी के अधिकारी श्रेष्ठ आत्मायें बच्चे, सदा उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ने वाले और उड़ाने वाले महावीर महावीरनियां बच्चे, एक बाप ही संसार है इस लगन से मगन रहने वाले लवलीन बच्चों को, लवलीन बनना अर्थात् बाप समान सहज बनना। तो लवली और लवलीन दोनों बच्चों को बहुत-बहुत पदम-पदमगुणा यादप्यार और नमस्ते।

वरदान:-अपने हर कर्म वा विशेषता द्वारा दाता की तरफ इशारा करने वाले सच्चे सेवाधारी भव

Characteristics of

(1) सच्चे सेवाधारी किसी भी आत्मा को सहयोग देकर स्वयं में अटकायेंगे नहीं।

(2) वे सबका कनेक्शन बाप से करायेंगे। (3) उनका हर बोल बाप की स्मृति दिलाने वाला होगा। (4) उनके हर कर्म से बाप दिखाई देगा। (5) उन्हें यह संकल्प भी नहीं आयेगा कि मेरी विशेषता के कारण यह मेरे सहयोगी हैं।

यदि आपको देखा, बाप को नहीं तो यह सेवा नहीं की, बाप को भुलाया। In other words, It is disservice

सच्चे सेवाधारी (6) सत्य की तरफ सबका सम्बन्ध जोड़ेंगे, स्वयं से नहीं।

स्लोगन:- किसी भी प्रकार की अर्जी डालने के बजाए सदा राज़ी रहो।

यमक (Rhyme)

अव्यक्त इशारे - संकल्पों की शक्ति जमा कर श्रेष्ठ सेवा के निमित्त बनो

श्रेष्ठ भाग्य की लकीर खींचने का आधार है - "श्रेष्ठ संकल्प और श्रेष्ठ कर्म।"

चाहे ट्रस्टी आत्मा हो, चाहे सेवाधारी आत्मा हो, दोनों इसी आधार द्वारा नम्बर ले सकते हैं। दोनों को भाग्य बनाने का पूरा चांस है, जो जितना भाग्य बनाना चाहे बना सकते हैं।

अगर आपकी बुद्धि में भी बाबा के महावाक्यों के संदर्भमें कोई चित्र व लिखत व Short video जैसे कि गीता,कबीर,वेद, उपनीसद, धर्म शास्त्र जैसे कि कुरान, बाइबिल इत्यादि आते है जिससे कि हमारे दैवी भाई बहनों को मुरली समझने एवं recall/याद करने में सरलता हो जिससे कि उनका पुरुषार्थ तीव्र हो।
तो कृपया उसे merababa2809@gmail.com पर ईमेल करें।
जो भी भेजे, बाबा के महावाक्य के साथ भेजे जिससे connection समझने में सरलता रहे।
आपके द्वारा भेजे गये inputs को वेरिफिकेशन के बाद मुरली में use करेंगे।

सभी अपने को निश्चय रूपी आसन पर स्थित अनुभव करते हो? निश्चय का आसन कभी हिलता तो नहीं है? किसी भी प्रकार की परिस्थिति या प्रकृति या कोई व्यक्ति निश्चय के आसन को कितना भी हिलाने का प्रयत्न करे, लेकिन वह हिला न सके - ऐसे अचल-अडोल आसन है? निश्चय के आसन में सदा अचल रहने वाला निश्चय-बुद्धि विजयन्ति गाया हुआ है। तो अचल रहने की निशानी है - हर संकल्प, बोल और कर्म में सदा विजयी। ऐसे विजयी रत्न स्वयं को अनुभव करते हो? किसी भी बात में हिलने वाले तो नहीं हो? जो समझते हैं कभी कोई बात में हलचल मच सकती है या कोई प्रकार का संकल्प भी उत्पन्न हो सकता है ऐसे पुरुषार्थी हाथ उठाओ? ऐसे कोई हैं जो समझते हों कि हाँ, हो सकता है? अगर हाथ न उठायेंगे तो पेपर बड़ा कड़ा आने वाला है, फिर क्या करेंगे? कोई भी मुश्किल पेपर आये उसमें सभी पास होने वाले हो तो पेपर की डेट अनाउन्स करें। सब ऐसे तैयार हो? फिर उस समय तो नहीं कहेंगे कि यह बात तो समझी नहीं थी और सोची नहीं थी, यह तो नई बात आ गई है? निश्चय की परीक्षा है कि जिन बातों को सम्भव समझते हो, वह असम्भव के रूप में पेपर बन के आयेंगी, फिर भी अचल रहोगे?

Attention Please...!

कल्याणकारी बाप की श्रीमत पर चलने वाली आत्मायें सिवाय कल्याण के, चढ़ती कला के और कोई भी संकल्प कर नहीं सकती हैं। उनका हर संकल्प, हर कार्य के प्रति समय, वर्तमान का भविष्य के प्रति समर्थ संकल्प होगा, व्यर्थ नहीं होगा। घबराते तो नहीं हो? सामना करना पड़ेगा। पेपर का सामना अर्थात् आगे बढ़ना, अर्थात् सम्पूर्णता के अति समीप होना। अब यह पेपर आने वाला है। स्वयं स्पष्ट बुद्धि वाले होंगे तो औरों को भी स्पष्ट कर सकेंगे। इसका मतलब यह तो नहीं समझते हो कि होना नहीं है। ड्रामा में जो होता रहा है, समय-प्रति-समय, उसमें माखन से बाल ही निकलता है न? कोई मुश्किल हुआ है? बाप-दादा नयनों पर बिठाये, दिल तख्त पर बिठाये पार करते ले आ रहे हैं ना? कोई क्या अन्त तक साथ निभाने का या किसी भी परिस्थितियों से पार ले जाने का वायदा व कार्य

So, Be Prepared..

फाइनल पेपर

निभायेंगे। नहीं साथ ले ही जाना है ना। सर्वशक्तिमान साथी होते हुए भी यह संकल्प उत्पन्न होना - उसको क्या कहेंगे? ऐसे व्यर्थ संकल्प समाप्त कर जिस स्थापना के कार्य के निमित्त हो, बाप-दादा के मददगार हो, उस कार्य में मग्न रहो। अपनी लगन की अग्नि को तीव्र करो। जिस लगन की अग्नि से ही विनाश की अग्नि तीव्र गति का स्वरूप धारण करेगी। अपने रचे हुए अविनाशी ज्ञान यज्ञ, जिसके निमित्त ब्राह्मण बने हुए हो, इस यज्ञ में पहले स्वयं की सर्व कमजोरियों व कमियों की आहुति डालो। तभी सारी पुरानी दुनिया को आहुति पड़ने के बाद समाप्ति होगी। अब दृढ़ संकल्प की तीली लगाओ। तब यह सम्पन्न होगा।

(08.02.1975)

मीठे शिवबाबा कहते हैं की "बच्चे इसमें मेरी भी कोई बड़ाई नहीं, मैं भी ड्रामा के बंधन में बांधा हुआ हूँ। एवं ड्रामा सबसे ज्यादा शक्तिवान है।"

तो हमारे शिवबाबा हमारे लिए मात-पिता-भाई-साजन-सजनी....इन short सर्वश्व हैं।

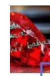

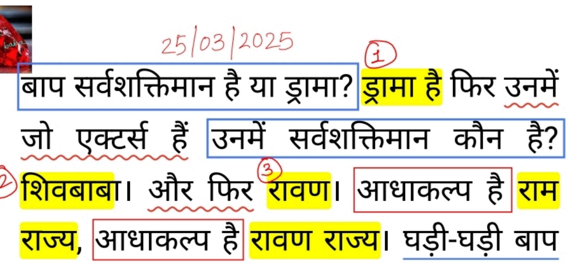
25/03/2025
बाप सर्वशक्तिमान है या ड्रामा? ड्रामा है फिर उनमें जो एक्टर्स हैं उनमें सर्वशक्तिमान कौन है? शिवबाबा। और फिर रावण। आधाकल्प है राम राज्य, आधाकल्प है रावण राज्य। घड़ी-घड़ी बाप

और हमारे लिए ड्रामा हुआ खुदा या रब । क्योंकि ड्रामा के बंधन में बांधे हुए हम न चाहते भी शिवबाबा से बिछड़ते हैं और संगम पर ख्वाबों में भी न होने के बावजूद शिवबाबा से मिलते हैं।

तो आज उस रब(drama) को तहे दिल से सुक्रिया अदा कर रहे हैं जो हमे हमारा सच्चा हमसफर/साथी मिल गया।

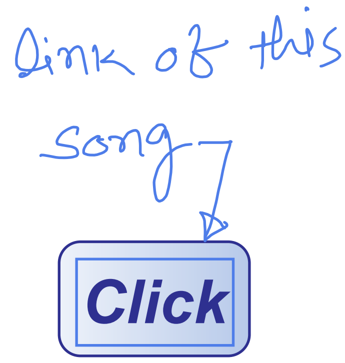

जिस साथीसे जब हम बिछड़ रहे थे उस ही पल उनसे और खुद से दृढ संकल्प किया था की भल हमें ड्रामा अनुसार जाना पड रहा हैं पर आप को पाना यही मेरा पहला और आखरी अर्थात सदैव लक्ष्य रहेंगा।

फिर उसके लिए कुछ भी करना पड़े, कोई भी कीमत चुक्तू करनी पड़े - शंकर के मुआफिक सारे विश्व की पीडाओ रूपी ज़हर ही क्यों न पीना पड़े, सब कुछ हँसते हँसते मंजूर हैं। पर हर हाल में आप को पाना ही मेरा लक्ष्य हैं।

तो आज ये गीत सच्चे साथी शिवबाबा को और साथ मे ड्रामा/रब को समर्पित...

Tu hai ab jo baahon mein, Qarar hai
Rab Ka Shukrana
{करार का हिंदी अर्थ:- ठहराव; स्थिरता, तसल्ली, संतोष।}

(ओ मेरे प्राण बाबा,
चूँ की अब हर पल तुम मेरी यादों रूपी बाहों में हो जो की मेरी तुम से बिछड़ने से ले कर अब तक की एक ही ख्वाहिश थी।
तो अब मुझे तुम्हारी बाहों में जन्नत से भी पदम गुना ज्यादा करार/संतोष हैं।
और इसके लिए ड्रामा को शुक्रिया, की उसने हमें आखिरन भी फिर से मिला ही दिया या यूँ कहो की हम दो, दो न रहते एक हो ही गये।) →

Saanson mein hai nasha, Khumar hai
Rab Ka Shukrana

(मेरी साँसों में हर एक पल में जो एक नशा हैं की "मैं कौन और मेरा कौन..!"
सतयुग तो बहुत दूर की बात हैं मेरे बाबा, इस ही पल से सारे विश्व का पांचो तत्वों सहित मालिक हूँ मैं।)

Tu hi ab mera deen hai, imaan hai
Rab Ka Shukrana
{"दीन" का अर्थ है जीवन का एक तरीका, एक संपूर्ण प्रणाली जो अल्लाह (ईश्वर) की संप्रभुता को स्वीकार करती है।
"ईमान" का अर्थ हिंदी में "विश्वास" या "आस्था" है।}

(तो तूम ही अब मेरे दीन हो और तुम ही मेरा ईमान भी हो।)

Mera kalma(holy words)hai tu, Azaan(prayer) hai

(तुम ही मेरी अज़ान हो और अज़ान के समय बोले जाने पवित्र अलफ़ाज़ भी तुम ही हो। In short, मेरे लिए तुम ही सब कुछ हो...)

Rab Ka Shukrana
Rab Ka... ...Shukrana

Tu mila toh sab mila
Ab kisi se kya gila
Tujhme simtu, aa main bikhru
Teri baahon mein....

Tu mila toh sab mila
Ab kisi se kya gila...
{"गिला" का हिंदी में अर्थ शिकायत या उलाहना है। यह शब्द किसी अप्रसन्नता या असंतोष को व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल होता है। इसे "शिकवा" या "नाराजगी" के रूप में भी समझा जा सकता है। }

(ओ मेरे प्राण,
तुम मुझे मिल गए हो,तो मुझे सब कुछ मिल गया हैं... " जो पाना था, सो पा लिया" अब मुझे संकल्प मात्र भी कुछ नहीं चाहिए -
और इसीके चलते अब मुझे इस सारे जहान में किसी से भी कोई भी शिकायत नहीं अर्थात सब अच्छे है और सबको हमने माफ कर दिया है...)

Tujhme simtu, aa main bikhru
Teri baahon mein fanaa ho jaaun main
(बस अब तो मुझे तुम्हारी यादों की बाहों में बिखर जाना हैं या यु कहो की तुज में सिमट/समा जाना हैं जिसका भक्ति में गायन हैं "ज्योति ज्योत समाई"

और जैसे पतंगा शमा पर फ़िदा हो जाता हैं एक पल की भी सोच के बिना, उसी प्रकार तुम पर, तुम्हारी प्यार भरी बाहों में अर्थात श्रीमत पर फ़िदा हो जाना हैं।)

Tu hi ab duniya meri, Jahaan hai
Rab Ka Shukrana

(तो अब तुम ही मेरी दुनिया/जहान हो अर्थात मैं तुम्हारे सिवा अब जाऊं तो जाऊं कहा..? मेरा अस्तित्व ही तुमसे है...)

Khwabon ki khayalon ki udaan hai
Rab Ka Shukrana

(मेरे बुद्धि द्वारा देखे जानेवाले ख्वाबो की एवं
मन द्वारा किये जाने वाले ख्यालों की तुम ही तो उड़ान हो।)

Tu hi ab mera deen hai, imaan hai
Rab Ka Shukrana
Mera kalma hai tu, Azaan hai
Rab Ka Shukrana

=======$$$$$$======

Sab se ho jaaun pare jo ishara tu kare
Abb toh rehna hai tujhi mein
Gumshuda hoon main

Sab se ho jaaun pare jo ishara tu kare

(तुम जो सिर्फ एक इशारा मात्र ही कर दो - तो इस पल ही ये स्थूल शरीर समेत सारी की सारी सृष्टि से भी परे हो जाऊं और तुम्हारे पास चला आऊँ।)

Abb toh rehna hai tujhi mein
(अब तो हर पल तुम्हारे साथ ही, तुज में समा कर ही बिताना हैं।)

Gumshuda hoon main
Ho teri baahon mein....
(तो अब मैं इस पुरानी पतित दुनिया से संपूर्ण गुमशुदा अर्थात परे हूँ और हर पल तुम्हारी यादों रूपी बाहों में समाया हुआ रहता हूँ और सदैव ऐसे ही रहना चाहता हूँ।
इससे ज्यादा कुछ नहीं चाहिए मुझे, सतयुग का विश्व महाराजन का पद भी नहीं।)

Jazbo ka ab toh naya bayaan hai
Rab Ka Shukrana

{"बयान" का अर्थ है कथन, विवरण, या व्याख्या।}

(तुम्हारे लिए पवित्र जज़्बातो/feelings का अब हर पल दिल से नया बयान हो रहा हैं।)

Naya rutba nayi shaan hai
Rab Ka Shukrana

(क्योंकि मैं तुम्हारा हो चुका हूँ, तो ultimately मैं तुम्हारे तरह ही इस सारी श्रुष्टी का भी अभी से ही मालिक बन गया हूँ, तो उस मालिकपन का मेरा एक नया सा रुतबा और नयी सी शान हो तुम।)

Tu hi ab mera deen hai, imaan hai
Rab Ka Shukrana
Mera kalma hai tu, Azaan hai tu
Rab Ka Shukrana

Rab Ka...
Rab Ka...
Rab Ka... Shukrana

link of other such type of songs to submerge in the love of supreme → **Click**